The Institution of Engineers (India)

दी इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इण्डिया)

(Established 1920, Incorporated by Royal Charter 1935)

UTTAR PRADESH STATE CENTRE, ENGINEERS BHAWAN, RIVER BANK COLONY, LUCKNOW-226018

उत्तर प्रदेश स्टेट सेन्टर, इंजीनियर्स भवन, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ–226018

Telephone : +91 0522-3512499 | E-mail : upsc@ieindia.org | website : www.ieiup.org.in

"A Century of Service to the Nation"

Ref. No. : UPSC/IEI/ Press Release

Dated : 22/03/2024

Press Release

The Institution of Engineers (India), UP State Centre, Lucknow celebrated 'World Water Day'

Today on 22/03/2024 at Engineers' Bhawan , River Bank Colony, Lucknow celebrated World Water Day with the theme 'Water for Peace'. The Keynote Speaker of this program was Dr. Manish Rameshchandra Ranalkar, Scientist–F and Head, Meteorological Centre, Lucknow.

He told that the world is in the grip of a climate crisis, with disruptive weather patterns wreaking havoc, intensifying extreme events, and jeopardizing water security on a global scale. Climate change is no longer a distant threat; it is here, altering landscapes, contaminating water sources, and amplifying the vulnerability of populations worldwide. Indeed, the essence of the climate crisis lies in its profound impact on water resources. From devastating floods to encroaching sea levels, from vanishing ice fields to raging wildfires and parched droughts, the manifestations of climate change are vivid and alarming. However, amidst this turbulence, water emerges as both a casualty and a potential solution. Sustainable water management stands as a linchpin in bolstering societal resilience, curbing carbon emissions, and safeguarding ecosystems. Every individual and household hold a stake in this battle; collective action at grassroots levels is imperative. The nexus between water and climate change is undeniable, with extreme weather exacerbating water scarcity, pollution, and unpredictability. These disruptions, permeating every aspect of the water cycle, pose a grave threat to sustainable development, biodiversity, and access to water and sanitation. As floods ravage lands and sea levels encroach, the contamination of vital resources becomes imminent, while infrastructure faces unprecedented strain. Glacial retreat, once a distant concern, now imperils the regulation of freshwater resources for millions in low-lying regions. Droughts and wildfires, in turn, destabilize communities, inciting unrest and migration on a staggering scale. Moreover, the degradation of vegetation and tree cover exacerbates erosion, diminishes groundwater reserves, and compounds food insecurity. The burgeoning demand for water, driven by energy-intensive practices in agriculture and industry, further exacerbates this crisis. In charting a path forward, policymakers must accord water the prominence it deserves within climate action plans. Sustainable water management not only bolsters adaptation efforts but also serves as a potent tool in mitigating climate change itself. Political cooperation across borders is imperative to balance competing water needs and prioritize the conservation of vital ecosystems.

Furthermore, innovative financing mechanisms must be leveraged to attract investment, foster job creation, and empower governments to realize their water and climate objectives. The time for decisive action is now; the fate of our planet hinges on our collective resolve to confront the intertwined challenges of water and climate change. Together, let us forge a future where water is cherished, protected, and harnessed as a force for resilience and renewal in the face of the climate crisis.

At the beginning of the program the Chairman of the Institution of Engineers, UP State Centre Shri Satya Prakash welcomed all the visitors. On this occasion Shri V.B. Singh, Past National Vice President, IEI, Shri Masarrat Noor Khan, FIE, IP Chairman of the Institution of Engineers, UP State Centre, Mr. Sudhir Kumar Verma, SCC Member, Shri Ashok Kumar Singh, Past Enginee-in-Chief, Irrigation Department, Shri Ashok Kumar Agrawal, Engineer-in-Chief, PWD, Shri Ashish Kumar, General Secretary, U.P.E.A., Dr. Ashish Srivastava, Past Chancellor, Dr. Rajendra Prasad, Agricultural University, Pusa were also present. The convener of the event was Shri K P Tripathi, SCC Member, he told about the subject matter and also introduced the Keynote Speaker. The program concluded with the vote of thanks by Dr. Jaswant Singh, Past Honorary Secretary, IEI, UP State Centre, Lucknow. A large number of audience participated in the program.

Satya Prakash
Chairman

The Institution of Engineers (India)

दी इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इण्डिया)

(Established 1920, Incorporated by Royal Charter 1935)

UTTAR PRADESH STATE CENTRE, ENGINEERS BHAWAN, RIVER BANK COLONY, LUCKNOW-226018

उत्तर प्रदेश स्टेट सेन्टर, इंजीनियर्स भवन, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ–226018

Telephone : +91 0522-3512499 | E-mail : upsc@ieindia.org | website : www.ieiup.org.in

"A Century of Service to the Nation"

Ref. No. : UPSC/IEI/ Press Release

Dated : 22/03/2024

प्रेस विज्ञप्ति

इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स ने विश्व जल दिवस मनाया

आज दिनांक 22/03/2024 को रिवर बैंक कालोनी स्थित इन्जीनियर्स भवन में विश्व जल दिवस मनाया गया जिसका विषय 'शांति के लिए जल' था । इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. मनीष रमेशचंद्र रानालकर, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रमुख, मौसम विज्ञान केंद्र, लखनऊ थे । उन्होंने बताया कि दुनिया जलवायु संकट की चपेट में है, विघटनकारी मौसम के मिजाज से तबाही मच रही है, चरम घटनाएं तेज हो गई हैं और वैश्विक स्तर पर जल सुरक्षा खतरे में पड़ गई है। जलवायु परिवर्तन अब कोई दूर का ख़तरा नहीं है; परिदृश्य बदल रहा है, जल स्रोतों को दूषित कर रहा है, और दुनिया भर में आबादी की भेद्यता को बढ़ा रहा है। दरअसल, जलवायु संकट का सार जल संसाधनों पर इसके गहरे प्रभाव में निहित है। विनाशकारी बाढ़ से लेकर समुद्र के स्तर के अतिक्रमण तक, लुप्त हो रहे बर्फ के मैदानों से लेकर भयंकर जंगल की आग और सूखे तक, जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्तियाँ ज्वलंत और चिंताजनक हैं। हालाँकि, इस उथल-पुथल के बीच, पानी एक दुर्घटना और एक संभावित समाधान दोनों के रूप में उभरता है। सतत जल प्रबंधन सामाजिक लचीलेपन को मजबूत करने, कार्बन उत्सर्जन पर अंकुश लगाने और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस लड़ाई में प्रत्येक व्यक्ति और परिवार की हिस्सेदारी है; जमीनी स्तर पर सामूहिक कार्रवाई जरूरी है। पानी और जलवायु परिवर्तन के बीच संबंध को नकारा नहीं जा सकता है, चरम मौसम के कारण पानी की कमी, प्रदूषण और अप्रत्याशितता बढ़ जाती है। जल चक्र के हर पहलू में व्याप्त ये व्यवधान, सतत विकास, जैव विविधता और पानी और स्वच्छता तक पहुंच के लिए गंभीर खतरा पैदा करते हैं। जैसे-जैसे बाढ़ भूमि को तबाह करती है और समुद्र का स्तर अतिक्रमण करता है, महत्वपूर्ण संसाधनों का प्रदूषण आसन्न हो जाता है, जबकि बुनियादी ढांचे को अभूतपूर्व तनाव का सामना करना पड़ता है। हिमनदों का पीछे हटना, जो एक समय दूर की चिंता थी, अब निचले क्षेत्रों में लाखों लोगों के लिए मीठे पानी के संसाधनों के नियमन को खतरे में डाल रहा है। सूखा और जंगल की आग, बदले में, समुदायों को अस्थिर कर देती है, जिससे बड़े पैमाने पर अशांति और प्रवासन भड़क उठता है। इसके अलावा, वनस्पति और वृक्ष आवरण का क्षरण को बढ़ाता है, भूजल भंडार को कम करता है और खाद्य असुरक्षा को बढ़ाता है। कृषि और उद्योग में ऊर्जा-गहन प्रथाओं के कारण पानी की बढ़ती मांग इस संकट को और बढ़ा देती है। आगे का रास्ता तय करने में, नीति निर्माताओं को जलवायु कार्य योजनाओं में पानी को वह प्रमुखता देनी चाहिए जिसका वह हकदार है। सतत जल प्रबंधन न केवल अनुकूलन प्रयासों को बढ़ावा देता है बल्कि जलवायु परिवर्तन को कम करने में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी कार्य करता है। प्रतिस्पर्धी जल आवश्यकताओं को संतुलित करने और महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण को प्राथमिकता देने के लिए सीमाओं के पार राजनीतिक सहयोग अनिवार्य है। इसके अलावा, निवेश को आकर्षित करने, रोजगार सृजन को बढ़ावा देने और सरकारों को अपने जल और जलवायु उद्देश्यों को साकार करने के लिए सशक्त बनाने के लिए नवीन वित्तपोषण तंत्र का लाभ उठाया जाना चाहिए। अब निर्णायक कार्रवाई का समय आ गया है; हमारे ग्रह का भाग्य पानी और जलवायु परिवर्तन की परस्पर जुड़ी चुनौतियों का सामना करने के हमारे सामूहिक संकल्प पर निर्भर करता है। आइए हम सब मिलकर एक ऐसे भविष्य का निर्माण करें जहां पानी को संजोया जाए, संरक्षित किया जाए और जलवायु संकट का सामना करने के लिए लचीलेपन और नवीकरण की शक्ति के रूप में उपयोग किया जाए।

उन्होंने बड़ी और छोटी प्रणालियों की स्थापना को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई पहल के बारे में भी बताया। लक्ष्य प्राप्ति एवं भावी योजना पर चर्चा की गयी। उन्होंने अब तक क्रियान्वित सौर प्रणालियों के मॉडल भी प्रस्तुत किये और विद्युत ऊर्जा के भविष्य के बारे में भी बात की।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में इन्स्टीटयूशन ऑफ इन्जीनियर के अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। इस अवसर पर संस्था के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री वी.बी.सिंह, पूर्व अध्यक्ष श्री मसर्रत नूर खां, श्री सुधीर कुमार वर्मा, एस.सी.सी. सदस्य, श्री अशोक कुमार सिंह, से0नि0 प्रमुख अभियंता, सिंचाई विभाग, श्री अशोक कुमार अग्रवाल, प्रमुख अभियंता, लो0नि0वि0, श्री आशीष कुमार, महासचिव, यू0पी0ई0ए0 एवं डा0 आशीष श्रीवास्तव, पूर्व कुलपति, डा0 राजेन्द्र प्रसाद कृषि वि0वि0, पूसा भी मौजूद थे। कार्यक्रम के संयोजक श्री के.पी.त्रिपाठी, एस.सी.सी. सदस्य ने विषय वस्तु के साथ साथ मुख्य वक्ता का परिचय भी दिया। कार्यक्रम का समापन डॉ.जसवंत सिंह, पूर्व मानद सचिव के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ। कार्यक्रम में बड़ी सँख्या में लोगों ने भाग लिया।

(सत्य प्रकाश)
अध्यक्ष